**ओ३म्**

**‘आर्यसमाज के दो शीर्ष विद्वानों पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय और**

**पं. युधिष्ठिर मीमांसक की साहित्य साधना की झांकी’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यसमाज के पुराने विद्वान आर्थिक अभावों व आयु के दसवें दशक में भी कितना पुरुषार्थ करते थे, इसका एक उदाहरण पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी द्वारा पंडित विश्वनाथ वेदोपाध्याय विद्यामार्तण्ड जी की पुस्तक **‘‘ऋग्वेद परिचय”** के प्रकाशकीय में लिखे वचनों से मिलता है। हम अनुभव करते हैं कि हमारी वर्तमान पीढ़ी व पाठकों को इसका परिचय मिलना चाहिये, अतः हम आज पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के इस पुस्तक में दिये प्रकाशकीय निवेदन में से कुछ प्रेरणादायक वचनों को प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमने पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय जी के साक्षात् दर्शन ही नहीं किये अपितु उनकी मृत्यु से पूर्व हम उनके पास जाते थे, उनसे भेंट करते थे और उनका स्नेह से पूर्ण आर्शीवाद हमें मिलता था। हमने उनकी धर्मपत्नी के भी दर्शन किये हैं जो कन्या महाविद्यालय, जालन्धर की प्रथम स्नातिकाओं में थी। अधिक आयु के कारण कानों से सुन नहीं सकती थी। सायं पंडित जी और माता जी दोनों कुर्सियों पर आमने सामने बैठते थे और ईशारों में कुछ बातें कर लिया करते थे। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व पंडित विश्वनाथ वेदोपाध्याय जी ने अथर्ववेद भाष्य के प्रथम काण्ड का भाष्य पूरा किया था। इसेएक बार और वह देखना चाहते थे। उससे पूर्व ही 11 मार्च सन् 1991 में आपकी मृत्य हो गई थी। हमने उनकी मृत्यु के बाद उसे प्राप्त कर रामलाल कपूर ट्रस्ट पहुंचा दिया था। काण्ड 2 व 3 के भाष्य हम उनकी मृत्यु के तुरन्त बाद ट्रस्ट जाकर दे आये थे। प्रथम काण्ड का भाष्य कई महीनों तक उपलब्ध नहीं हुआ था, यहां तक कि उनकी समस्त पुस्तकें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भेंट कर देने के अवसर तक भी वह उपलब्ध नहीं हुआ था। डा. रामनाथ वेदालंकार जी की हमें सतत प्रेरणा मिलती रही, जिसके फलस्वरूप हम उनकी पुत्री बहिन इन्दिरा खन्ना जी के पास प्रत्येक सप्ताह जाते रहे और एक दिन वह हमें उपलब्ध हो ही गया जिसे हमने पहले डा. रामनाथ वेदालंकार जी को दिखाया, उसकी एक छाया प्रति तैयार की और भाष्य की मूल पाण्डुलिपि रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ जाकर दे आये थे जो बाद में प्रकाशित हो गया। अब यह भाष्य परोपकारिणी सभा, अजमेर और गुरुकुल कांगड़़ी से भी तीन-तीन खण्डों में प्रकाशित होकर उपलब्ध है।

 आर्यजगत के महान विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय जी की **‘ऋग्वेदपरिचय’** पुस्तक के प्रकाशकीय में लिखा है कि **‘श्री माननीय पं. विश्वनाथ जी विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड लिखित ऋग्वेद-परिचय रामलाल कपूर ट्रस्ट की ओर से हम प्रकाशित कर रहे हैं। ऋग्वेद एक महान् ग्रन्थ है। इस में 10552, चतुष्पदा पक्ष में 10482 ऋचायें हैं। इस के पूर्ण परिचय के लिये वृहद् ग्रन्थ अपेक्षित है। माननीय ग्रन्थकार ने साधारण जनों को ऋग्वेद का परिचय कराने के लिये यह लघुकाय ग्रन्थ लिखा है।**

 श्री माननीय पण्डित जी का वयः (आयु) लगभग 96 वर्ष है। दृष्टि मन्द हो गई है, हाथ में कम्पन भी है, पुनरपि आप वेदरूपी दिव्य सरस्वती की आराधना में सर्वात्मना संलग्न हैं। मैं समझता हूं कि यह सरस्वती की आराधना के कारण सरस्वती का विशेष वरदान है। आपने अथर्ववेद के भाष्य का लेखन जब प्रारम्भ किया था, तब आशा न्यून थी कि आप इस कार्य को पूर्ण कर पायेंगे। परन्तु परम पिता परमात्मा की कृपा से आप इस कार्य की समाप्ति के निकट पहुंच चुके हैं। 20 वें काण्ड से भाष्य लेखन आरम्भ करके आप 7वें काण्ड तक भाष्य पूर्ण कर चुके हैं। इस में 9-20 तक का भाष्य दानवीर वेद और वैदिक धर्म में अनन्य श्रद्धावान् चौधरी प्रतापसिंह जी (करनाल) के द्वारा उन के **‘‘श्री चौधरी नारायणसिंह प्रतापसिंह धर्मार्थ ट्रस्ट (करनाल)’’** की ओर से छप गया है। इस ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले समस्त वैदिक ग्रन्थ रामलाल कपूर ट्रस्ट (बहालगढ़-सोनीपत) (उस समय ट्रस्ट बहालगढ़-सोनीपत में राष्ट्रीय राजमार्ग पर था, यातायात का शोर बहुत था अतः इसे रेवली-सोनीपत में स्थानान्तरित किया गया) के प्रेस में ही छपते हैं और इसी के द्वारा बिकते हैं। गतवर्ष अचानक श्री चौधरी प्रतापसिंह जी के स्वर्गवास के कारण अथर्ववेद के 9-10 काण्ड के भाष्य के प्रकाशन की समस्या उत्पन्न हो गई थी, परन्तु हमने जैसे-तैसे 9-10 काण्ड का भाष्य श्री चौधरी प्रतापसिंह जी ट्रस्ट के द्वारा ही प्रकाशित कर दिया। उत्तराधिकारी महानुभावों ने इस की छपाई के लिये द्रव्य की कोई व्यवस्था नहीं की थी। आगे भी आशा न्यून ही है। अब काण्ड 7-8 के प्रकाशन की हमारे सामने महती समस्या है। साधन सीमित होने से रामलाल कपूर ट्रस्ट इस भार को वहन करने में अक्षम है। फिर भी हम यथासम्भव शीघ्र ही काण्ड 7-8 को प्रकाशित करने का यत्न करेंगे। श्री माननीय पण्डित जी जब इस वय में भी अथर्ववेदभाष्य पूर्ण करने में संलग्न हैं तो वेदप्रेमी ऋषिभक्त आर्यजनों का भी यह पुनीत कर्तव्य है कि वे इस शुभ कार्य की पूर्ति में घन से सहयोग प्रदान करें।”

 ऋग्वेद परिचय ग्रन्थ के विषय में पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी कहते हैं कि इस ग्रन्थ के लिखाने का श्रेय श्री पं. मनोहर जी वेदालंकार (देहली) को है। आपने इस ग्रन्थ को लिखने में श्री पण्डित जी को पूरा सहयोग प्रदान किया। हम यह बता दें कि पं. विश्वनाथ जी विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी में वेदों के प्रोफेसर थे। उन दिनों गुरुकुल को कोई सरकारी सहायता नहीं मिलती थी और न ही सेवानिवृत होने पर पेंशन आदि सुविधिायें। वेतन बहुत कम मिलता था। इन विद्वानों की आर्थिक स्थिति का अनुमान इस उदाहरण से किया जा सकता है कि पं. विश्वनाथ जी के एक शिष्य ने भी गुरुकुल कांगड़ी में ही वेदों का अध्यापन कराया। सेवानिवृति के बाद उन्हें एक विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ का अध्यक्ष बना दिया गया। वेतन पूर्व की तुलना में अधिक था। एक दिन वह अपनी धर्म पत्नी को बाजार ले गये और कपड़े की दुकान से दो महंगी साड़िया उन्हें दिलवाई। एक वर्ष बाद जब उन्होंने उन्हें उन साड़ियों के बारे में पूछा तो माता जी ने आचार्य जी को उत्तर दिया कि वह दोनों साड़ियां तो उन्होंने अपनी पुत्रियों को दे दी हैं। उन्होंने आचार्य जी को यह भी कहा था कि ऐसी साड़िया पहनने की उनकी उम्र नहीं है। आचार्य जी ने हमें बताया था कि गुरुकुल में कार्य करते हुए वेतन कम होने के कारण वह महंगे वस्त्र क्रय नहीं कर सकते थे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय जी को भी सेवानिवृत्ति के बाद कैसा जीवन व्यतीत करना पड़ा होगा।

 पं. मीमांसक जी ऋग्वेद परिचय के प्रकाशन की चर्चा करते हुए आगे कहते हैं कि ऋग्वेद परिचय के लेखन के पश्चात् इसके प्रकाशन की समस्या हमारे सामने उपस्थित हुई। इस समस्या को भी श्री पं. मनोहर विद्यालंकार (श्री राधेश्याम अरोड़ा) ने अपनी बुआ श्रीमती जानकी देवी, पत्नी श्री दामोदर दास चावला की स्मृति में इस ग्रन्थ के कागज का मूल्य 2726/- रुपया (सन् 1986 में, तब हमारा कुल वेतन एक हजार रूपया था) देकर सुलझा दिया। इस महान् सहयोग के लिये हम श्री पं. मनोहर जी विद्यालंकार के आभारी हैं।

 पं. विश्वनाथ जी ने 103 वर्ष की आयु तक अथर्ववेद के भाष्य के लेखन का कार्य किया। उन दिनों उनको आंखों दीखता बहुत कम था तथा उनके हाथों में कम्पन होता था जो लेखन में बाधक था। इस पर भी वह रूके नहीं और कार्य करते रहे। देहरादून में शीत ऋतु में जीवन कष्ट कर हो जाता है। इन दिनों हम भी देहरादून में अत्यधिक ठण्ड का अनुभव कर रहे हैं जिसमें लेखन करना कठिन होता है। उन दिनों एसी व हीटर का प्रयोग भी नहीं प्रायः नहीं होता था। अतः पंडित विश्वनाथ जी का कार्य किसी साधना, तप व पुरुषार्थ से कम नहीं है। पं. युधिष्ठिर मीमासंक जी भी देश के उच्च कोटि के विद्वान थे। आप महामहोपाध्याय की उपाधि से आदृत थे। अनन्य ऋषि भक्त थे। ऋषि ग्रन्थों पर जो शोध, लेखन व प्रकाशन का कार्य आपने किया है वह सदैव स्मरण किया जायेगा। हमारे पास उनके अधिकांश ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनमें से अधिकांश को हमने पढ़ा है। वेदवाणी पत्रिका के पंडित मीमांसक जी सम्पादक रहे। हमें इस पत्रिका का ग्राहक रहने का भी सौभाग्य प्राप्त रहा और आज भी हम इसके ग्राहक हैं। दिल्ली में सन् 1975 के आर्यसमाज स्थापना शताब्दी सम्मेलन में हमने पंडित जी के प्रथम वार दर्शन किये थे। सन् 1995 में रामलाल कपूर ट्रस्ट परिसर, बहालगढ़-सोनीपत में जब उनको रूग्णावस्था में विश्व भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, उस अवसर पर भी हम वहां उपस्थित थे। जितना हमने पंडित जी को पढ़ा है, हमें लगता है कि उनकी लेखनी में एक जादू था। बहुत सरल भाषा का प्रयोग करते थे। आपने ऋषि, देव व पितृ ऋण सहित ऋषि दयानन्द और अपने गुरुवर्य पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी का ऋण उनके भावनानुरूप आदर्श कार्यों को करके भलीभांति चुकाया है जिससे आर्यसमाज को बहुत लाभ होने के साथ साहित्य के क्षेत्र में दुलर्भ व शोधपूर्ण सामग्री प्राप्त हुई है। जिन आर्थिक अभावों में आपने लेखन, प्रकाशन व अध्यापन का जो कार्य किया, वह स्तुत्य है। हम आर्य समाज के उपर्युक्त दोनों विद्वानों को नमन करते हैं।

 पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय जी ने जो साहित्य साधना की है उसके परिणाम से जो ग्रन्थ प्रकाशित हुए उनके नाम हैं, सामवेद का आध्यात्मिक भाष्य (यह भाष्य पण्डित जी ने दो बार किया, पहली बार का भाष्य प्रकाशनार्थ परोपकारिणी सभा को दिया गया था, उन्होंने प्रकाशित नहीं किया और न लौटाया, पता चला कि वह उनसे खो गया था, पण्डित जी ने दोबारा भाष्य किया जो दयानन्द संस्थान दिल्ली से पं. भारतेन्द्र नाथ जी अर्थात् महात्मा वेदभिक्षु जी ने प्रकाशित किया, हमने इसे पढ़ा है। बाद में परोपकारिणी सभा वाला भाष्य भी मिल गया था।), अथर्ववेद भाष्य सम्पूर्ण (रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित 9 खण्डों में), सन्ध्यारहस्य, वैदिक पशुयज्ञमीमांसा, वैदिक जीवन, वैदिक गृहस्थाश्रम, बाल सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का सरल अध्ययन, अथर्ववेद परिचय, यजुर्वेद स्वाध्याय तथा पशुयज्ञसमीक्षा, शतपथ ब्राह्मणस्थ अग्निचयनसमीक्षा, ऋग्वेदपरिचय, वीरमाता का उपदेश आदि। आर्यसमाज में हमें यह भी आश्चर्य होता है कि ऋग्वेदपरिचय की सन् 1986 में 1000 प्रतियां प्रकाशित हुई थीं। 30 वर्ष बीत जाने पर भी यह एक हजार प्रतियां खपी नहीं हैं। इससे आर्यों की वैदिक ग्रन्थों में स्वाध्याय में रूचि का अनुमान लगाया जा सकता है। यह स्थिति सन्तोषप्रद नहीं है। यह भी बता दें कि पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय जी पर एक कन्या ने शोध कर शोध उपाधि प्राप्त की है। शोध में उनके मार्गदर्शन थे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के वेद विभाग के अध्यक्ष डा. दिनेश चन्द्र शास्त्री जी। हमें भी इस कन्या को पण्डित जी से सम्बन्धित कुछ सामग्री व ग्रन्थ उपलब्ध कराने का सुअवसर मिला था।

 इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**